तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 29 • अंक 113-114 • जुलाई-दिसम्बर, 2001

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं
(मान्य विश्वविद्यालय)
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-113-114 JULY-DECEMBER, 2001

Patron
Ms. Sudhamahi Regunathan
Vice-Chancellor

Editor in Hindi Section
Dr. Mumukshu Shanta Jain

English Section
Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial-Board
Dr. Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satyaranjan Banerjee, Calcutta
Dr. R.P. Poddar, Pune
Dr. Gopal Bhardwaj,Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr. Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr. Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr. J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL. 113-114 JULY-DECEMBER, 2001

Editor in Hindi
Dr. Mumukshu Shanta Jain

Editor in English
Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial Office
Tulsi Prajna, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306 (Rajasthan)

Publisher	:	Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun-341 306 (Rajasthan)
Type Setting	:	Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun-341 306 (Rajasthan)
Printed at	:	Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015 (Rajasthan)

Sbuscription (Individuals) Annual Rs. 100/-, Three Year 250/-, Life Membership Rs. 1500/- Sub-Institutions/Libraries) Annual Rs. 200/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors may not agree with them.

अनेकान्त सिद्धान्त और व्यवहार

राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रस्तुत शोध-पत्र

1-3 ~~जनवरी~~ अप्रैल, 2001, गंगाशहर (बीकानेर)

अनुक्रमणिका / Contents

विषय	लेखक	पृष्ठ
1. नये वर्ष पर विश्व के नाम संदेश	आचार्य महाप्रज्ञ	1
2. अनेकान्त की सार्थक प्रस्तुति	मुमुक्षु शान्ता जैन	5
3. अनेकान्तवाद	आचार्य महाप्रज्ञ	8
4. भारतीय दार्शनिक चिन्तन में अनेकांत	प्रो. सागरमल जैन	15
5. क्या वेदान्त को अनेकान्त किसी अंश में स्वीकार्य हो सकता है?	डॉ. दयानन्द भार्गव	32
6. अनेकान्तवाद - एक विवेचन	प्रो. तुषार कान्ति सरकार	37
7. भगवान महावीर और अनेकान्तवाद	डॉ. अशोक कुमार जैन	39
8. अनेकान्तवाद और उसके प्रयोग	मोहनसिंह भण्डारी	48
9. पारिवारिक शान्ति और अनेकान्त	डॉ. बच्छराज दूगड़	56
10. महावीर का अनेकान्त : सामाजिक विमर्श	शुभू पटवा	65
11. वैचारिक सहिष्णुता का सिद्धान्त : अनेकान्त	डॉ. सुदीप जैन	71
12. वर्तमान समस्याओं के समाधान में अनेकान्त की उपयोगिता	डॉ. हेमलता बोलिया	77
13. शान्त-सहवास में अनेकान्त की भूमिका	साध्वी आरोग्यश्री	83
14. अनेकान्त का सामाजिक पक्ष	श्रीमती रंजना जैन	88
15. अनेकान्त की प्रासंगिकता	सिद्धेश्वर भट्ट	93
14. महावीर का अनेकांत : कुछ पक्ष, कुछ प्रश्न	प्रो. गोपाल भारद्वाज	96
15. लोकार्पण : आवश्यक निर्युक्ति (भाग-1) का		102

Anekānta: Theory and Practice

Research papers presented in National Symposium

Held on 1-3 April, 2001 at Gangashahar (Bikaner)

English Section

Subject	Author	Page
1. Fatless Cream and Decaffeinated Coffee ...	Sudhamahi Regunathan	103
2. Anekānta — A Jaina Contribution to Scholastic Methodology	M.R. Gelra	113
3. Anekānta Metaphysico - Spiritual Perspective	Prof. Kamal Chand Sogani	119
4. Anekāntavada and its statement in Saptabhanginaya	Arun K. Mukherjee	128
5. Uniqueness of Anekāntavāda	H.R. Dasegowda	135
6. The Applied Aspect of Anekāntā Philosophy	Dr. Nemi Chand Jain	138
7. Anekāntvada : Objections raised by Prof. N.K. Devaraja and answers given by Acharya Shri Mahaprajna	Dr. Pradyumna Shah	148
8. Anekānta: Its Relevance to the Modern Times	Dr. Anil Dhar	153

Postal Department : NUR 08 R.N.I. No. 28340/75

य:स्याद्वादी वचनसमये योप्यनेकान्तदृष्टि:
श्रद्धाकाले चरणविषये यश्च चारित्रनिष्ठ: ।
ज्ञानी ध्यानी प्रवचनपटु: कर्मयोगी तपस्वी,
नानारूपो भवतु शरणं वर्धमानो जिनेन्द्र: ॥

जो बोलने के समय स्याद्वादी, श्रद्धाकाल में अनेकान्तदर्शी, आचरण की भूमिका में चरित्रनिष्ठ, प्रवृत्तिकाल में ज्ञानी, निवृत्तिकाल में ध्यानी, बाह्य के प्रति कर्मयोगी और अन्तर् के प्रति तपस्वी है, वह नानारूपधर भगवान् वर्द्धमान मेरे लिए शरण हो।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित—

एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन

(महादेव लाल गंगादेवी सरावगी फाउण्डेशन)

41/1 सी, झावुतल्ला रोड़, कोलकता- 700 019

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं
के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित